संगठन

एक बार मैने एक स्वामी जी से पूछा कि महाराज बुराईयो मे इतना अधिक मेल क्या है जबकि अच्छाईयां ाबिलकुल भी संगठित नही है । जैसे चोर और आतांकबादी आपस मे मिल कर काम कर लेते है । जुआ खेलना, शराब पीना, वैश्यावृति आदि संजत के ही फैलते है जबकि इसके विपरीत चलने वाला अपने को बिलकुल अकेला ही पाता है । एकाएक कोई जबाब वह नही दे पाये मुझे खुद ही सोचना पडा इस बारे मे । तो यह निकर्ष निकला कि जो कमजोर होता है उसे वहारी शक्ति का सहारा लेना पडता है बुराईयाँ कमजोर है अच्छे गुण आदमी का सबल सहारा होते है । और यह निकर्ष भी निकला कि दुनिया मे अच्छे आदमियो की बहुतायत है पर बह सव अपने अपने दायरे मे अलग अलग बुराईयो से अपनी अपनी लडाईयां लड़ रहे हैं ।

लेकिन समाजिक स्तर पर कुछ ऐसे बड़े काम होते है जो एक मनुष्य अकेले अपने वल बूते पर नही कर सकता है उनके लिये संगठन की जरूरत पडती है । अच्छे विचारो व सबल व्यक्तित्व वाले लोग जिनमे आत्म विश्वास की कमी नही है दृढ संगठन बनाने के लिये बहुत उपयुक्त है। परन्तु यदि संग रहने वालो मै ठनी रहे तो अच्छे विचार, श्रेष्ट लक्ष्य होने पर भी कार्यप्रणाली की भिन्नता और अन्य मतभेदो के चलते वो बिखर जाते है उनके संगठन पनप नही पाते, टूट जाते है।

अगर संग रहने बाले ठान ले विचार विनियम के बाद एक मत हो जाय तथा अपने को एक दूसरे से श्रेष्ठ होने के अंह पर विजय पाप्त कर ले, तो लक्ष्य की प्राप्ति सहज हो जाती है इसी का नाम संगठन है ।

किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये संगठन इतना जरुरी नही है जितना कि संगठित होना । बिचारो का एक मत होना व लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अटूट निश्चय होकर, रास्तो का एकीकरण लक्ष्य तक पहुचने के लिये। संगठन समाजिक मूल्यो का हो या समाजिक सुधार के प्रयासो का हो । उन प्रयासो मे निहित भावना र्सवजन कल्याण ब र्सवजन हिताय हो तभी वह सम्पूर्ण समाजिक सुधार ला सकते है । व्यक्तिगत मसलो के लिये हमारे लक्ष्य सार्वजनिक होने चाहिए जैसे अगर हम सफाई से रहना चाहते है तो हमे हमारे पूरे मौहल्ले की सफाई को ध्यान मे रखते हुये यह काम करना पडेगा । वरना हम सफाई से नही रह सकेगें । हमारे आस पास गन्दगी रहेगी ही चाहे हम कितने ही प्रयत्न क्यो न क लें ।

इसके अलावा व्यक्तिगत समस्याओ को सुलक्षाने का काम परिवार का होना चाहिये न कि संगठनों का हाँ यदि परिवार उस समस्या का हल नही कर पा रहा है तो बाहरी मदद ली जा सकती है पर किसी संगठन के अर्न्तगत नही वरना हम देश ही रहे है कि सँगठनो का अधिकांश समय व्यक्तिगत समस्याओ को हल करने की कोशिशो मे ही निकल जाता है । इससे संगठन कमजोर पड़ता है लोगो की रुचि संगठन मे कम हो जाती है तथा दूसरो को संगठन के कार्यो पर उंगली उठाने का अवसर मिल जाता है ।

अब देखेगे कि संगठन मे कितना बल है और वह कँहा से आता है तथा इसका उपयोग कैसे हो रहा है । आप सभी ने मारवाडी समाज मे प्रचिलित दिवालिया होने की कहानी जरुर सुनी होगी जिसमे दिवालिया परिवार को हर मारवाडी परिवार से एक रुपया व एक ईट भेजी जाती है । रुपया व्यपार करने के लिये व ईट मकान बनाने के लिये । हम आपको एक गाँव की अपबीती सच्ची घटना सुनाते है जिसको हम एक सहयोगी संस्था ने मदद की थी उस कार्य को देखने गये थे । गांव बालो न सोचा हम अमेरिका से आये है तो जयो न इनसे आगे के काम के लिये पांच लाख रुपये मांग लिये जाय जो उनकी जमीन पर खेती करने के लिये नीचे तलाब से उपर की जमीन तक पानी ले जाने के लिये पाईप व पम्प आदि के खरीदने के लिये चाहिये थे । पानी का तलाव तो इसी संस्था की मदद से बनाया था । हमने उनसे साफ कह दिया कि हम तो तीन साल से कुछ कमाते नही है और अज भी खाना भी अपकी मेहामान नवाजी मे खाया है । इतने पैसे तो हमारे पास नही है हाँ कुछ चर्चा करते है शायद कोई तरीका निकल आए । वो सभी सहमत हुए तो हमने पूछा कि इस गाँव मे क्या ग्राम कोष है तो उत्तर मिला हाँ है । इसके बाद हमारा दूसरा प्रश्न था कि इस गाँव मे कितने परिवार है मालूम हुआ तीन सौ । हमने फिर एक सवाल दाग दिया कि आप सब लोग एक दिन मे कितना गुटका खाते है सम्मिलित रुप से वो सब बोले करीब पांच । एक गुटका एक रुपये का आता है यह हमे मालूम था हमारी बाहें खिल गई क्योकि म जल्दी हिसाब लगा लेते है । फिर हमने कहा कि यदि आप पांच गुटके न खाकर चार गुटके खाये और इस तरह जो एक रुपया बचेगा ग्राम कोष मे देदे तो कैसा रहेगा । तो हमे जबाब मिला या मे कौन सी बात है हम सब कर सकत है ? हमने वहीं एक और शर्त लगा दी यह प्रस्ताव ग्राम सभा मे पास करवा लेगे, जबाब मिला हाँ । तो फिर हमने उन्हे बताया कि इस तरह से आप एक साल मे एक लाख आठ हजार रुपये जमा कर लेगें । उन रुपयो को और ग्राम सभा के प्रस्ताव के साथ आप लोग बैंक जाय और बैंक बालो से कहे कि हमको चार लाख रुपये व्याज पर दे दो । ज्योकि आपने एक साल मे एक लाख से ज्यादा पैसा जमा करके दिखा दिया है कि आपके सँगठन मे दम है, इसे देखकर बैंक सहर्ष आपको चार लाख रुपये देगा । फिर आपकी आय वढ जायेगी अधिक पैदावार होने के कारण और आप बह लोन दो साल मे ही वापिस कर पायेगे । फिर हने एक प्रश्न दागा क्या अब भी हमारी जरुरत है तो वह सब गंभीरता से आपस मे बाते कर रहे थे जबाब नही मे था ।

य्ह था संगठन का वल जो एक दिशा मे एक जुट होकर सोचने से आता है । इसके विपरीत यदि एक परिवार के ही सदस्यो के उत्थान की सोची जायेगी तो विषमता ही पैदा होगी समाज मे । संगठन जो समाजिक है उनका उपयोग समाज के सामूहिक लाभके लिये होना चाहिये परिवार समाज की एक इकाई है उसका उत्थान स्वतः ही हो जाएगा ।

प्रन्तु आज अधिकतर हर संगठन ही व्यक्ति केन्द्रित हो गये है उपर से नीचे तक । नेता का बेटा नेता, हीरो का बेटी हीरोइन, के चलन के कारण कांग्रेस जैसे उच्च स्तरीय संगठन भी पविार मे फंस कर रह गये है । संगठन का संचालन एसा होना चाहि कि हर स्तर पर समाधान की छूट हो पर दायरे संगठन का होगा जो पहले से निरधारित होने चाहिये । नेता का होना जरुरी है पर उसके चारो ओर चमचे नही बल्कि सच को कहने बाले होने चाहिए । दिशा का बदलाव जरुरी है मंजिल तक पहुचने के लिए कभी कभी पर मंजिल को ही नही बदल देना ठीक नहीं है । उपनेता वह हो जो परिवार से दूर तक सम्बन्ध नही रखता हो, इस तरह का संगठन ही पविार मे बदल जाता है संगठन नही रह पाता है । यही संगठन का लक्ष्य होता है । परिवार को संगठन से दूररखेगें त्भी समान विचारो वाले व्यक्तिों की क्षमता को समाज से ढूढ कर संगठन मे उनके स्थान को ऊनहै सौप सकेगें और समाज व परिवार दोनो ही आगे बढ पायेगें।

खेडब्रहमा गुजरात मार्च 21, 2002 भारत रश्मि उमेश रोहतगी 24161 Nilan Drive Novi MI 48375 USA ph®248) 471-5786
webpage :www.rurohatgi.com Email:rurohatgi@yahoo.com